Lecture Series No - 59.

Online class
Date - [illegible]
Day - [illegible]
Time - 10-10:30 A.M.

Topic

(1) Vedanta,

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A Part — I
Paper — I (H)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans: 1) शंकर के मतानुसार आत्मा का शरीर के साथ आसक्त हो जाना ही बंधन है। आत्मा स्वभावतः नित्य, शुद्ध, (चैतन्य) चैतन्य मुक्त और अविनाशी है। परन्तु अज्ञान से वशीभूत होकर, वह बन्धनग्रस्त हो जाता है।

यही बन्धन (Bondage) है। अविद्या (केवल मात्र विद्या के द्वारा) के नाश होने के साथ ही साथ जीव के पूर्व संचित कर्मों का अन्त हो जाता है और इस प्रकार वह दुखों से छुटकारा पा जाता है। अविद्या के अन्त ज्ञान से ही सम्भव है। मोक्ष को अपनाने के लिए ज्ञान

P.T.O.

परम आवश्यक है। (Dr. C. Sharma) के अनुसार — "Liberation therefore means removal of ignorance knowledge." जैसा कि काल्पनिक सांप अविद्या के दूर हो जाने पर रस्सी के वास्तविक रूप में आ जाता है। मीमांसा, मोक्ष की प्राप्ति कर्म के द्वारा सम्भव मानता है। परन्तु शंकर के अनुसार कर्म और भक्ति ज्ञान की प्राप्ति में भले ही सहायक हो सकती है, वह मोक्ष की प्राप्ति में सहायक नहीं हो सकती। मोक्ष का अर्थ है अविद्या को दूर करना। अविद्या केवल विद्या के द्वारा ही दूर हो सकती है। शंकर ने सिर्फ ज्ञान को ही मोक्ष का उपाय माना है। ज्ञान की प्राप्ति वेदान्त दर्शन के अध्ययन से ही सम्भव हो सकती है। END